International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(4): 33-35

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 33-35
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-03-2022
Accepted: 16-06-2022

डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश, भारत

कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में 'धर्म एवं दर्शन'

डॉ. कुशम लता

प्रस्तावना

धर्मवेत्ताओं ने धर्म के स्वरूप और लक्षण के विषय में विविध मत प्रस्तुत किए हैं। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में धर्म के सन्दर्भ में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। जिस नैतिक या शुभ कर्म द्वारा जीवन, परिवार, राष्ट्र तथा समाज को धारण किया जाए, वही धर्म है। ऋग्वेद में 'धर्म' शब्द का प्रयोग वेद – विहित धार्मिक विधियों या संस्कारों के रूप में हुआ है। अथर्ववेद में धर्म शब्द का प्रयोग धार्मिक क्रिया द्वारा संस्कार करने से प्राप्त गुण के अर्थ में हुआ है। मनुस्मृति के अनुसार धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध ये धर्म के दस लक्षण हैं। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में धर्म एवं दर्शन में वैष्णव सम्प्रदाय, शैवमत, वर्णित विविध देव–देवियाँ, नदियों के प्रति भक्तिभाव, यज्ञयागादि तथा दर्शन के विषय में विस्तार से वर्णन किया गया है।

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में कवि जयनारायण यात्री ने अधोवर्णित धार्मिक मतों एवं सम्प्रदायों का संकेत किया है।

वैष्णव सम्प्रदाय

वैष्णव समुदाय अतिप्राचीन काल से ही प्रचलित था। इस धर्म के अनुयायी विष्णु की पूजा करते थे। विष्णु वैदिक देवता है।[1] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' चम्पू काव्य में वैष्णव धर्म का व्यापक वर्णन है। इस चम्पू काव्य के रचनाकार जयनारायण यात्री स्वयं वैष्णव हैं। इस तथ्य का प्रमाण 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के आरम्भ में मंगलाचरण से प्राप्त होता है, इसका वर्णन इस प्रकार से है –

यथा –

श्रीकृष्णेश! त्रिभुवन गुरो! भीष्मचम्पूरचिष्णु,
र्वन्दे पादौ तव बहुलशो मूर्धना बद्धपाणिः।
एत स्तेऽहं चरणशरणं याचितुं शक्तिमेधे,
देहि ज्ञानं रूचिररचनां येन कुर्या ज्ञह्वद्याम्।। [2]

शैव मत

इस धर्म का सर्वप्रथम परिचय सिन्धु–सभ्यता के तत्सम्बन्धी अवशेषों से प्राप्त होता है। इन अवशेषों में प्रथम स्थान उस मुद्रा का है जिस पर शिव का स्वरूप पशुपति के रूप में चित्रित है। ऋग्वेद में शिव की एक उपाधि 'पशुप' मिलती है। रूद्र का संहारक रूप वैदिक स्तुतियों में विशेषतः प्राप्त होता है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' चम्पू काव्य के द्वितीय परिच्छेद में शिव का उल्लेख तो हुआ है परन्तु शैव धर्म के विषय में कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है। अतः शैव सम्प्रदाय का अनुमान सहज ही होता है।

वर्णित विविध देव–देवियाँ

धर्म और धार्मिक विचारधाराओं का मूल आश्रय देव भावना है। देवता की अमोघ एवम् अलौकिक शक्ति में विश्वास ही धर्म की नींव सुदृढ़ करता है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में देवी–देवताओं का उल्लेख इस प्रकार से मिलता है –

ब्रह्मा

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के प्रथम परिच्छेद में ब्रह्म का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

यथा –

चतुर्दिक्षु निजसृष्टिकृत शुभाशुभ पुण्यापुण्यानि विलोकयितु मिव धृतचतुराननाष्ट लोचनस्य, सकलजीवविधि लेख–लेखकस्य, समस्तसुरमुनि पूजितस्य, कमलासनस्य पद्मासन स्थितस्य विधे रध्यक्षतायां दिवौकसां मुनीनाञ्च समिति र्बभूव। [3]

अर्थात् चारों दिशाओं में अपनी सृष्टि के द्वारा किए हुए अच्छे–बुरे, पुण्य–पाप को देखने के लिए मानों जिसने चार मुख और आठ नेत्र धारण किए हुए हैं। सभी जीवों के भाग्य के लेख लिखने वाले की, सभी देवता–मुनियों से पूजे गए की, कमल के आसन पर पद्म आसन से बैठे हुए ब्रह्मा की अध्यक्षता में देवता और मुनियों की सभा हुई।

श्रीकृष्ण

कवि जयनारायण यात्री के आराध्य देव भगवान् श्रीकृष्ण का उल्लेख काव्य के आरम्भ में तो प्राप्त होता ही है, सम्पूर्ण चम्पूकाव्य में भी भगवान् कृष्ण का उल्लेख किया गया है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के प०चम परिच्छेद में राजा प्रतीपक श्रीकृष्ण के विषय में इस प्रकार से कहता है –

यथा –

नारायणाख्याप्रयतास्ययोगी,
दिवानिशं ध्यायति मानसेन
यो वासुदेवं भजते च नित्यं
तन्नारदोक्तं वितथं कथं स्यात्।। [4]

अर्थात् नारायण नाम से (आख्या) पवित्र (प्रयत) हे मुख (आस्य) जिसका योगी, जो दिन–रात श्रीकृष्ण का मन से ध्यान करता है और नित्य भजता है, उस नारद का कहा हुआ झूठा कैसे हो। अर्थात् झूठा नहीं हो सकता।

विष्णु

यथा –

परन्तु तपति तस्मिन् राजर्षौ मनोहरर्तो रस्यापि कश्चिप् प्रभावो नापतत्। स तथैव निर्मिषितनयनो निष्कम्पकायः, पदमासनासीनः स्वहृदयमन्दिर निहित चतुर्भुजमूर्ति र्विस्मृत क्षुत्तृषोऽनन्यमनसा भगवन्तं श्रीकृष्णं सस्मार। [5]

अर्थात् परन्तु तप करते हुए उस राजर्षि पर इस सुन्दर ऋतु का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह वैसे ही आँखें बन्द किए हुए, बिना हिले शरीर वाला, पदम् आसन पर बैठा हुआ, हृदयरूपी मन्दिर में चतुर्भुज मूर्ति रखे हुए, भूख–प्यास को भूले हुए एक मन से भगवान् श्रीकृष्ण को याद करता रहा।

गणेश

यज्ञादि अनुष्ठानों में गणेश की पूजा का वर्णन है। गणेश, भगवान् शिव के दूसरे पुत्र हैं, जो विघ्नों को समाप्त करने वाले हैं। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में राजकुमार शान्तनु के पैदा होने पर राजा प्रतीपक गणेश की पूजा करवाते हैं, इसका उदाहरण इस प्रकार से है –

ततो गणेशादिनवग्रहाणां पूजनं कारयित्वा क्रतुमकारयत्। [6]

अर्थात् तब गणेशादि नौ ग्रहों को पूजन करवाकर यज्ञ करवा दिया गया।

इन्द्र

वेदों में इन्द्र सबसे प्रमुख एवं शक्तिशाली देवता के रूप में वर्णित है। इसलिए उसे वैदिक आर्यों का राष्ट्रीय देवता माना गया है।[7] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के तृतीय परिच्छेद में इन्द्र का वर्णन किया गया है:

यथा –

विलासभावं क्षितिपोऽपि गच्छति
समृद्धिभिः किं कथनं विडौजसः।
प्रशास्तियो निर्जरलोक मादितो
न केवल ज्ञाननिधि स्तपोधनः।। [8]

अर्थात् धन दौलत से राजा भी विलासी हो जाता है, जो शुरू से देवलोक पर शासन करता है, उस इन्द्र की तो बात ही है। समृद्धियों से केवल ज्ञानी और तपस्वी विलासी नहीं होता। इसी परिच्छेद में देवदूत की उदासी को देखकर इन्द्र कहता है कि–

यथा

यावद् मघोनोऽशनि रस्ति पाणौ
तावत् कुचिन्ता न कदापि कार्या
भूयोऽपि भूरि क्षतिकारि किञ्चिच्
चेदब्रूहि शीघ्रं भयवर्जितस्त्वम्।। [9]

अर्थात् जब तक इन्द्र के हाथ में बज्र है, तब तक बुरी चिन्ता कभी नहीं करना। फिर भी यदि बहुत हानिकारक कुछ है तू निडर होकर जल्दी कहो।

कामदेव

कामदेव को शृंगारराज भी कहा गया है। ये प्रणय अथवा कामभाव के देव हैं। कामदेव युवाओं के पूज्य हैं और उनके हृदयों में उनका समावेश होता है। उनकी पूजा बसन्तोत्सव के समय ही अधिक की जाती है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के द्वितीय परिच्छेद में बताया गया है कि बसन्त ऋतु के आने पर पशु–पक्षी भी कामदेव के वश में हुए दिखाई देते हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार से है –

यथा

किसलयैः कुसुमै र्व्रतति द्रुमा,
विकसितैः कमलैः कमलाकराः।
मदनमत्तह्यदो मजुजांगना
बहुविभान्ति खगाः कुसुमाकरे।।[10]

अर्थात् लताएँ और वृक्ष कोमल पत्ते और फूलों से, तालाब खिले हुए कमलों से कामदेव से मस्त हृदये वाले स्त्री, पुरुष, पक्षी वसन्त ऋतु में बहुत शोभाषमान होते हैं।

इस चम्पू के तृतीय परिच्छेद में भी कामदेव का वर्णन किया गया है। गंगा, राजा प्रतीपक से कहती है कि –

यथा –

माराधीना सन्निधौ ते समेता।
पूर्णं कामं मामकं त्वं विधेहि
कामार्तानां गर्हित स्त्याग उक्तः
स्त्रीणां सद्भि र्मा मतः स्वीकुरुष्व।। [11]

अर्थात् मैं कामदेव के वश में हुई तेरे पास आई हूँ। तू मेरी (काम) इच्छा पूरी कर। सज्जनों ने काम से पीड़ित स्त्रियों का त्याग निन्दनीय कहा है। इसलिए तू मुझे स्वीकार कर।

देवियाँ

लक्ष्मीः 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के अष्टम परिच्छेद में लक्ष्मी का वर्णन किया गया है। शान्तनु, गंगा को जब पहली बार देखता है तो वह उसे विष्णु रहित लक्ष्मी–सी लगती है।

'माधवविहीनरमा मिव' [12]

शची

शची इन्द्र की पत्नी है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के तृतीय परिच्छेद में कहा गया है कि इन्द्राणी, इन्द्र के बाएँ भाग में बैठी है। [13]

नदियों के प्रति भक्तिभाव

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में नदियों के प्रति भक्तिभाव प्रकट किया गया है। इस चम्पू में गंगा नदी का वर्णन इस प्रकार से किया गया है।

गंगा

गंगा नदी भारतवर्ष की पवित्र नदी है। यह देवनदी, सुरनिम्नगा, भागीरथी आदि विविध नामों से प्रसिद्ध है। यह नदी हिमालय पर्वत से निकलती है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के प्रथम परिच्छेद में वसु, गंगा के विषय में इस प्रकार से कहते हैं –

यथा –

मातो! न यान्ति नरकं मनुजाः कदापि,
संस्पृश्य तेऽमृत समान पवित्र वारि।
मज्जन्ति ये प्रतिदिनं कथनं किमस्ति,
लीना वयं तु सलिले भवितास्म एव।। [14]

अर्थात् हे माता आपका अमृत के समान पवित्र पानी को छू कर मनुष्य कभी भी नरक में नहीं जाते। जो प्रतिदिन आपके पानी में स्नान करते हैं, उन का तो कहना ही क्या है। फिर हम तो उस पानी में लीन ही हो जाएँगे।

अपि च –

कलुष नाशिनीकूले, तपस्तप्तुं कदाचन
हरिद्वार मयन्ते न, कृष्णकृपा विना जनाः।। [15]

अर्थात् पापों का नाश करने वाली गंगा के किनारे तप करने के लिए हरिद्वार श्रीकृष्ण कृपा के बिना लोग कभी नहीं जाते।

यज्ञयागादि

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में यज्ञयागादि के महत्त्व को भी विस्तार से बताया गया है। इस चम्पू के सप्तम परिच्छेद में राजा प्रतीपक राजकुमार शान्तनु को यज्ञ के बारे में शिक्षा देता है, इसका वर्णन इस प्रकार से है –

यागेनाच्छो वाति वातो धरायां
रोगाः सर्वे नाशमेतेन यान्ति।
हृष्टः शक्रो भूरिवृष्टिं करोति
वेदोक्तोऽसौ विश्वशातप्रदायी।। [16]

अर्थात् यज्ञ से भूमि पर शुद्ध वायु बहती है। इस यज्ञ से भी सभी रोग नष्ट हो जाते है। प्रसन्न हुआ इन्द्र बहुत वर्षा करता है। वेदों ने इस यज्ञ को (विश्व) सब (शात) सुख देने वाला कहा है।

दर्शन

भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में जयनारायण यात्री ने दर्शन विषय से सम्बन्धित जानकारी भी दी है। इस चम्पू के अष्टम परिच्छेद में सांख्य दर्शन से सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार से है

यथा –

अशिक्षितो मृत्तिकालोष्टसन्निभो
विलोक्यते मर्त्यमूर्तिः स केवलम्।
विलज्जिताः पञ्चभूता अवाप्य त,
मतो मनुष्यांगना स्युः सुशिक्षिताः।। [17]

अर्थात् अशिक्षित मनुष्य मिट्टी के ढेले के समान होता है। वह केवल मनुष्य की मूर्ति अथवा मनुष्य के शरीर वाला दिखाई देता है। उस मनुष्य को पाकर पञ्चमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) इनसे मनुष्य का शरीर बना होता है, लज्जित होते हैं कि हम किस मूर्ख का शरीर बने। इसलिए मनुष्य स्त्रियाँ सुशिक्षित हों। इस चम्पू के पञ्चम परिच्छेद में आयुर्वेद और ज्योतिशास्त्र के विषय में बताया गया है। आयुर्वेद से सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार से है –

यथा –

विकलांग पिचण्डस्थं, स्त्रिया अपूर्णदोहदम्।
कुरूते बालकं नून मायुर्वेदेन भाषितम्।। [18]

अर्थात् आयुर्वेद ने कहा है कि स्त्री की अपूर्ण इच्छा गर्भस्थ बालक को अवश्य विकलांग बना देती है।

अपि च

व्याकरणस्याध्ययनानन्तरं तर्कबुद्धिवर्धक
न्यायशास्त्रस्यपठन मारभत। [19]

अर्थात् इस चम्पू के षष्ठ परिच्छेद में बताया गया है कि राजकुमार शान्तनु ने व्याकरण की पढ़ाई के बाद तर्क बुद्धि बढ़ाने वाला न्यायशास्त्र पढ़ना आरम्भ किया है।

इस प्रकार 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में दर्शन के विषय में बताया गया है।

निष्कर्ष

ऊपरलिखित विवरण से स्पष्ट है कि कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में 'धर्म एवं दर्शन' का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। इस चम्पू काव्य में वैष्णव सम्प्रदाय, शैवमत तथा विविध देव–देवियाँ, ब्रह्मा, श्रीकृष्ण, विष्णु, गणेश तथा इन्द्र, कामदेव, देवियों में लक्ष्मी और शची का वर्णन किया गया है। गंगा नदी के प्रति भक्तिभाव दर्शाया गया है तथा यज्ञयागादि का भी वर्णन किया गया है। इस चम्पू काव्य में सांख्यदर्शन और आयुर्वेद से सम्बन्धित उदाहरण भी दिए गए हैं जोकि काफी रोचक हैं। अतः शोध–कर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध–कार्य अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं को एतादृष विषय पर अनुसंधान करने हेतु प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ

1. प्राचीन भारतीय संस्कृत की सांस्कृतिक भूमिका, पृष्ठ 445
2. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, 1.1
3. वही, प्रथम परिच्छेद, पृष्ठ 8
4. वही, 5.1
5. वही, द्वितीय परिच्छेद, पृष्ठ 39
6. वही, पञ्चम परिच्छेद, पृष्ठ 98
7. मैक्डॉनल वैदिक माइथोलॉजी, पृष्ठ 54
8. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, 3.3
9. वही, 3.4
10. वही, 2.11
11. वही, 3.10
12. वही, अष्टम परिच्छेद, पृष्ठ 146
13. वही, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ, 46
14. वही, 1.25
15. वही, 2.8
16. वही, 7.13
17. वही, 8.1
18. वही, 5.7
19. वही, षष्ठ परिच्छेद, पृष्ठ 114